तो मैं क्या करूँ?

क्या कहूँ?
मैं सिर्फ दाक आधिकारी!

जो चल रहा है,
वो चलता रहेगा।
जो जल रहा है,
वो जलता रहेगा।
तलवार की इस भाषा में,
पहचान हमारी फैली है, दूर-दूर तक।
बनारहा हूँ मैं इस देश को अमीर,
और भाषण करते हैं, अहिंसा का...!
ज़मीन, तेल और धन के बीच,
कैसे रखूँ मैं सबको जिंदा?
जो है, वो मैंने कमाया है,
बनाया है।
जो ~~कि~~ कीर्ती है, जो यश्स्वी,
वो सब प्रजा की।
मैं आपमें से दाक हूँ,
अमीर हूँ, पर आम था।

जो मरे उनका क्या?
उनका क्या,
मैं भी क्या कर सकता था?
गुलाम बनने तैयार हैं,
देश तो उन सबका है,
और, जीवन का जिम्मा तो...
भुट्टका है...!